बिटिया थिरकै पायन पहिरे सनई की झुनझुनिया,
देखि करेजा बित्तन बाढ़ै, यह किसान की दुनिया ।।

5. निम्नांकित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिएः 4+4= 8

(स)

पेरी पटुका के बन्धन कै, जगमग अमर निसानी,
यहु असीस का सेंदुर जहितै, है अहिबात उजागर,
याक बूँद माँ बंदी होइगा, प्रेम-प्रीति का सागर,
बिंदिया माँ बइठे मुस्क्याती, केतनिउ सरस कहानी ।

(द)

रचना देखत बिसरइ रचनाकार ।
तब रचना कइ रूप होइ उजियार ।।
माटिहि कइ तन तबहु नाइँ मटिआन ।
जउधे आपन किहेस बसेर परान ।।

इकाई - तीन

6. डॉ. जगदीश गुप्त की काव्यगत विशेषताओं का सोदाहरण विवेचना कीजिए। 7

7. गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' के काव्य-सौन्दर्य का उद्‌घाटन कीजिए। 7

इकाई - चार

8. 'हास्य-व्यंग्य अवधी कविता का स्थाई चरित्र है'- सप्रमाण सिद्ध कीजिए। 7

9. चन्द्रभूषण त्रिवेदी 'रमई काका' की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 7

Roll No. _____

A-199

बी.ए. (भाग-3) परीक्षा, 2015

(रेगुलर)

हिन्दी

तृतीय प्रश्न-पत्र

(आधुनिक ब्रजभाषा और अवधी काव्य)

समय : तीन घण्टे] **[पूर्णांक : 50**

निर्देश : कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** है शेष चार इकाइयों में से प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न करना है।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के लघुत्तर दीजिए : 2x10= 20

(क) 'भारतेन्दु' की चार ब्रजभाषा-काव्य-कृतियों का नामोल्लेख कीजिए।
(ख) 'उद्धवशतक' की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
(ग) आधुनिक अवधी साहित्य के चार कवियों के विषय में बताइए।
(घ) आधुनिक ब्रजभाषा के दो कवियों का परिचय दीजिए।
(ड.) गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' की दो काव्य-कृतियों का परिचय दीजिए।
(च) 'छन्दशती' के भाषिक वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।
(छ) 'कंगला किसान की बिटिया'- कविता का केन्द्रीय-भाव स्पष्ट कीजिए।

(ज) 'राम मड़ैया' में कवि किस प्रकार से ग्राम्य जीवन का सजीव वर्णन करता है?

(झ) रमई काका का ग्राम्य प्रेम उनकी कौन सी कविता में अभिव्यक्त हुआ है? प्रकाश डालिए।

(ञ) 'बहइ बतास, मेघ झूमइ, बँसवारि।
जइसे परछन करइ उआरि-उआरि।।

पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

इकाई - एक

2. निम्नांकित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : 4+4= 8

(क)

मनमोहन तें बिछुरी जब सों तन आँसुन सों सदा धोवती हैं।
'हरिचन्द' जू प्रेम के फंद परी कुल की कुल लाजहिं खोवती हैं।।
दुख के दिन कों कोऊ भाँति बितै बिरहागम रैन संजोवती हैं।
हम हीं अपनी सदा जानैं सखी निसि सोवती हैं किधौं रोवती हैं ।।

(ख)

कान्ह-दूत कैधौं ब्रह्म-दूत ह्वै पधारे आप
धारे प्रन फेरन कौ मति ब्रजबारी की ।
कहै रतनाकर पै प्रीति-रीति जानत ना
ठानत अनीति आनि नीति लै अनारी की ।।
मान्यौ हम, कान्ह ब्रह्म एक ही, कह्यौ जो तुम,
तौ हूँ हमैं भावति न भावना अन्यारी की ।
जैहै बनि-बिगरि न बारिधिता बारिधि की
बूँदता बिलैहै बूँद बिबस बिचारी की ।।

3. निम्नांकित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए: 4+4= 8

(ग)

सुख सोचि सनेह करौ न कबौं लगिहै न तु अन्त कलंक को टीको।
परिये नहिं प्रीति के फंदन मैं, यह काम करै जय की फँसरी को।
मनभावत जानत जाको अबै, कछु द्यौस मैं ह्वै है सो गाहक जी को ।
जिय जाने 'सनेही' सदैव रहौ, 'पकवान है उँची दुकान को फीको ।।'

(घ)

छाँड़ि गए परितोषि हमैं,
दुःख-दोख उन्हें किमि जाइ अरूझै।
बातन-बातन मैं बहरावत,
को बिरहीन की बातन बूझै ।
आपुने आगे न देखैं कछू,
ब्रज चाहे बिथागिनि मैं जरि जूझै ।
ऊधव! सावन के अँधरान कौ,
बारहौ मास हरेरोई सूझै ।।

इकाई - दो

4. निम्नांकित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए: 4+4= 8

(अ)

जो सब धरमन का धारे हयि
सब मा मिलि एक रूपु द्याखयि,
वुहु क्यसन, महम्मद, ईसा, बुद्धा,
बहयि आय सुन्दर मनई ।।

(ब)

टेंटे पर लरिका का दाबे मेहरी द्वारू बहारै,
बड़का भैया गेंद बनाये सूखे ब्याल उछारै ।